Q. 1848 ई० की क्रांति के परिणाम :-

Ans:- 1848 ई० की क्रांति के फलस्वरूप फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना हुई। 1848 के अन्त में नेपोलियन तृतीय फ्रांस का राष्ट्रपति बना। लुई नेपोलियन के सत्ता में आने के साथ सैनिक तानाशाही के दिन अब दूर नहीं थे। इस प्रकार फ्रांस में 1848 की क्रांति असफल रही परन्तु अमीरों के विरुद्ध गरीबों की पहली क्रांति के रूप में फरवरी क्रांति उल्लेखनीय रहेगी।

फ्रांस की क्रांति तो असफल रही लेकिन शेष यूरोप में इसने आग लगा दी। शायद ही यूरोप का कोई देश इसके प्रभाव से अछूता रहा। वियना में मार्च में छात्रों और श्रमिकों का विद्रोह हुआ और आस्ट्रिया के सम्राट को संविधानिक निर्माण और लोकतन्त्रीय व्यवस्था की स्थापना की मांग करनी पड़ी। मैटरनिख को आस्ट्रिया छोड़कर विदेश भागना पड़ा। बुडापेस्ट में कौसुथ हंगरी स्वतंत्र गणतंत्र की स्थापना की। मार्च महीनों में ही इटालवी राज्यों में विद्रोह की आग भड़क उठी। 15 मार्च को पोप के राज्य में विद्रोह की लहर फैली और 18 मार्च को मिलान के लोगों ने विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। 22 मार्च को वेनिस ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की और दूसरे ही दिन सार्डिनिया के राजा चार्ल्स एडवर्ड ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 15 मार्च को बर्लिन में विद्रोह हुआ और फ्रेडरिक विलियम को केवल प्रशा के लिए ही नहीं समस्त जर्मनी के लिए वैधानिक शासन का सिद्धान्त स्वीकार करना पड़ा। उसने समस्त जर्मनी के एकीकरण और वैधानिक शासन स्थापित करने के निमित्त एक जर्मन राष्ट्रीय संसद को आमंत्रित की। इस प्रयोग के परिणाम की प्रतीक्षा किए बिना ही जर्मनी के अन्य राज्यों की प्रजा उठ खड़ी हुई। बवेरिया के लोगों ने अपने राजा को सिंहासन त्यागने के लिए विवश किया और अपने लिए एक उदार शासन स्थापित कर लिया। ऐसे ही विद्रोह बोहेमिया, डेनमार्क, हालैण्ड, आयरलैण्ड आदि देशों में हुए। इंगलैण्ड भी इस क्रांति के प्रभाव से अछूता न रहा।

इस प्रकार 1848 की क्रांति ने संपूर्ण महाद्वीप को हिला दिया। लेकिन, वह उतनी ही शीघ्रता से असफल हुई जितनी शीघ्रता से वह सफल हुई थी। इटली, फ्रांस, आस्ट्रिया तथा प्रशा में जनतांत्रिक आन्दोलन बुरी तरह कुचल दिए गए। ब्रिटेन और बेल्जियम में यथास्थितिवाद का पुनः प्रभुत्व कायम हो गया। इस असफलता के कई कारण थे। इस क्रांति की सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि यह मुख्यतः

नगरीय क्रांति थी, देहातों ने इसमें कोई योगदान नहीं दिया। द्वितीयतः यह बुद्धिजीवियों की क्रांति थी। मजदूरों ने इस क्रांति में हिस्सा तो लिया परन्तु इसे कृषकों का समर्थन नहीं मिल सका।

असफलता के बावजूद इस क्रांति वर्ष ने यूरोपीय इतिहास में एक युग का अन्त और दूसरे युग का आरंभ किया और भविष्य के इतिहास की एक रूप-रेखा प्रस्तुत की। वर्ग-संघर्ष और राष्ट्रीय-विद्वेष, अखिल-जर्मनवाद, अखिल-स्लाववाद तथा मार्क्सवाद को इसने इतिहास की क्यारी में लगा दिया। मैटर्निख व्यवस्था का अंत इसकी दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। पूर्वी यूरोप में सामंतवाद को समाप्त करना इसकी दूसरी सामाजिक आर्थिक उपलब्धि थी। इसने काफी हद तक 1789 की क्रान्ति के अधूरे कार्य को पूरा किया।

—— x —— x ——